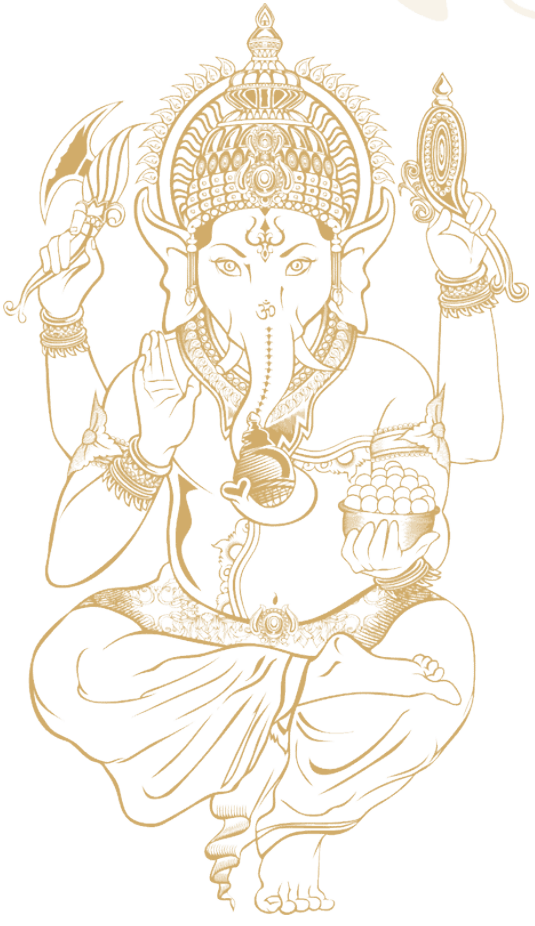

# Devanshu

# Muskan

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121953501

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121953501 Date: 16/04/2026

| | | |
|---|---|---|
| पुल्लिंग | लिंग | स्त्रीलिंग |
| 08/01/1996 | जन्म तिथि | 16-17/11/1999 |
| सोमवार | दिन | मंगल-बुधवार |
| घंटे 07:46:00 | जन्म समय | 02:15:00 घंटे |
| घटी 00:38:22 | जन्म समय(घटी) | 48:10:47 घटी |
| India | देश | India |
| Firozpur | स्थान | Delhi |
| 30:55:00 उत्तर | अक्षांश | 28:39:00 उत्तर |
| 74:38:00 पूर्व | रेखांश | 77:13:00 पूर्व |
| 82:30:00 पूर्व | मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| घंटे -00:31:28 | स्थानिक संस्कार | -00:21:08 घंटे |
| घंटे 00:00:00 | ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे |
| 07:30:39 | सूर्योदय | 06:44:20 |
| 17:44:31 | सूर्यास्त | 17:27:14 |
| 23:48:13 | चित्रपक्षीय अयनांश | 23:51:04 |

| | | |
|---|---|---|
| धनु | लग्न | कन्या |
| गुरु | लग्न लग्नाधिपति | बुध |
| कर्क | राशि | कुम्भ |
| चन्द्र | राशि-स्वामी | शनि |
| आश्लेषा | नक्षत्र | धनिष्ठा |
| बुध | नक्षत्र स्वामी | मंगल |
| 1 | चरण | 4 |
| विष्कुम्भ | योग | ध्रुव |
| वणिज | करण | बव |
| डी-डीगेश्वर | जन्म नामाक्षर | गे-गैरी |
| मकर | सूर्य राशि(पाश्चात्य) | वृश्चिक |
| विप्र | वर्ण | शूद्र |
| जलचर | वश्य | मानव |
| मार्जार | योनि | सिंह |
| राक्षस | गण | राक्षस |
| अन्त्य | नाड़ी | मध्य |
| श्वान | वर्ग | मार्जार |

# ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

| विंशोत्तरी | | ग्रह | राशि | अंश |
|---|---|---|---|---|
| बुध 15वर्ष 10मा 26दि | | लग्न | कन्या | 00:48:46 |
| शुक्र | | सूर्य | वृश्चि | 00:11:39 |
| 04/12/2018 | | चंद्र | कुंभ | 05:50:04 |
| 04/12/2038 | | मंगल | धनु | 28:58:26 |
| शुक्र | 05/04/2022 | बुध व | तुला | 27:58:48 |
| सूर्य | 05/04/2023 | गुरु व | मेष | 03:03:20 |
| चन्द्र | 04/12/2024 | शुक्र | कन्या | 14:31:46 |
| मंगल | 03/02/2026 | शनि व | मेष | 19:01:31 |
| राहु | 03/02/2029 | राहु व | कर्क | 12:51:01 |
| गुरु | 05/10/2031 | केतु व | मक | 12:51:01 |
| शनि | 04/12/2034 | हर्ष | मक | 19:16:07 |
| बुध | 04/10/2037 | नेप | मक | 08:03:15 |
| केतु | 04/12/2038 | प्लूटो | वृश्चि | 15:52:07 |

| विंशोत्तरी | |
|---|---|
| मंगल 0वर्ष 5मा 7दि | |
| गुरु | |
| 25/04/2018 | |
| 25/04/2034 | |
| गुरु | 12/06/2020 |
| शनि | 24/12/2022 |
| बुध | 31/03/2025 |
| केतु | 07/03/2026 |
| शुक्र | 05/11/2028 |
| सूर्य | 24/08/2029 |
| चन्द्र | 24/12/2030 |
| मंगल | 30/11/2031 |
| राहु | 25/04/2034 |

व - वकी  स - स्थिर
अ - अस्त  पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

**23:48:13  चित्रपक्षीय अयनांश  23:51:04**

## लग्न-चलित

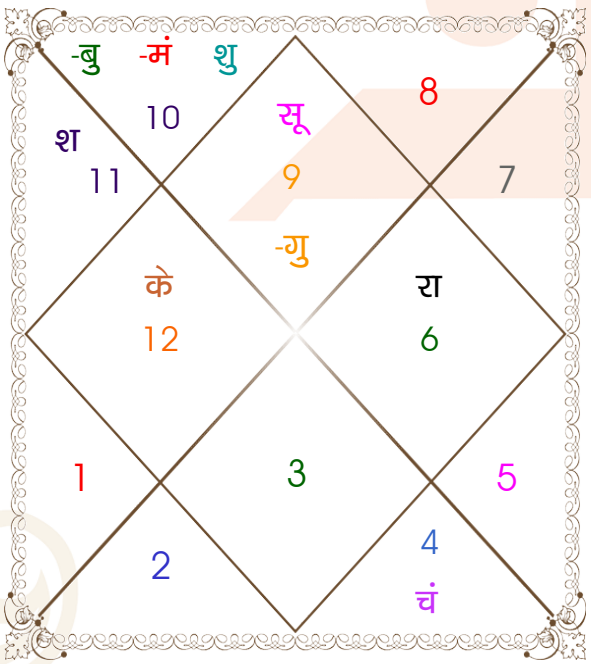


## लग्न-चलित

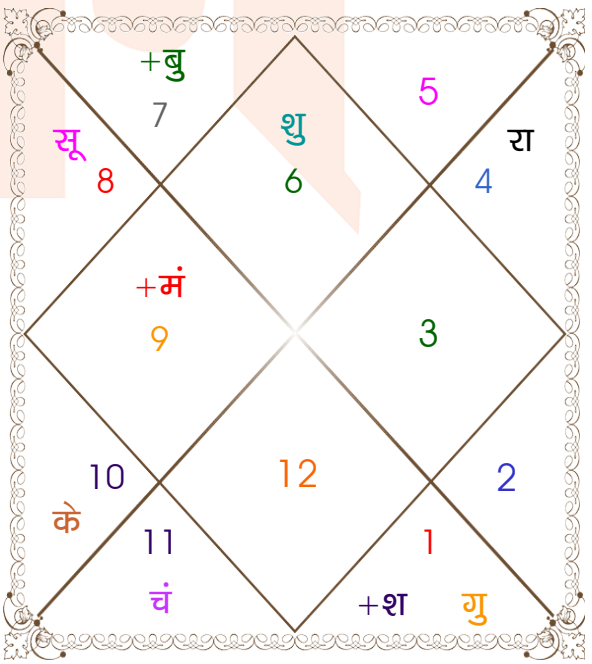

## अष्टकूट गुण सारिणी

| कूट | वर | कन्या | अंक | प्राप्त | दोष | क्षेत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ण | विप्र | शूद्र | 1 | 1.00 | -- | जातीय कर्म |
| वश्य | जलचर | मानव | 2 | 1.00 | -- | स्वभाव |
| तारा | प्रत्यारि | साधक | 3 | 1.50 | -- | भाग्य |
| योनि | मार्जार | सिंह | 4 | 2.00 | -- | यौन विचार |
| मैत्री | चन्द्र | शनि | 5 | 0.50 | -- | आपसी सम्बन्ध |
| गण | राक्षस | राक्षस | 6 | 6.00 | -- | सामाजिकता |
| भकूट | कर्क | कुम्भ | 7 | 0.00 | हाँ | जीवन शैली |
| नाड़ी | अन्त्य | मध्य | 8 | 8.00 | -- | स्वास्थ्य/संतान |
| कुल : | | | 36 | 20.00 | | |

कुल : **20 / 36**

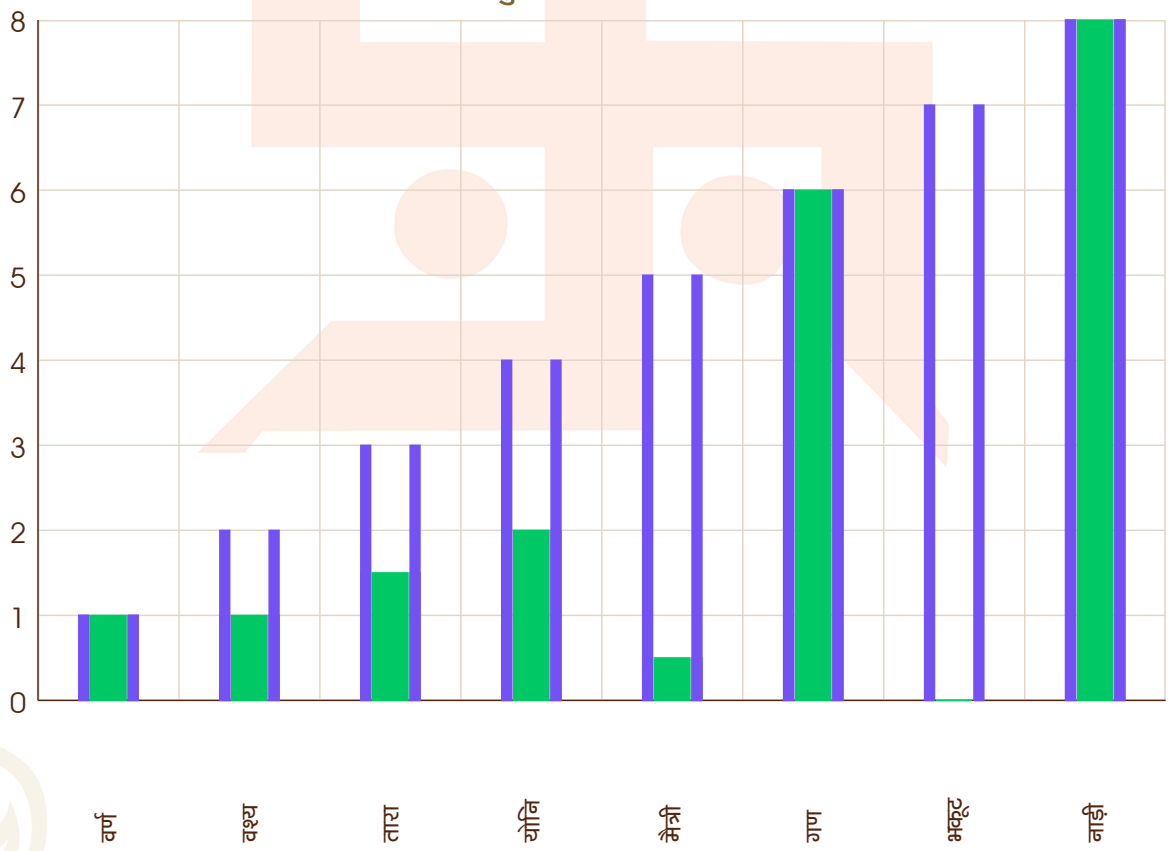

# अष्टकूट मिलान

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

क्मअंदीन का वर्ग श्वान है तथा डनोंद का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार क्मअंदीन और डनोंद का मिलान औसत है।

## मंगलीक दोष मिलान

क्मअंदीन मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है।

डनोंद मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

**त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।**
**त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।**

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि क्मअंदीन कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

क्मअंदीन तथा डनोंद में मंगलीक मिलान ठीक है।

## निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

# अष्टकूट फलादेश

## वर्ण

क्मअंदीन का वर्ण ब्राह्मण तथा डनोंद का वर्ण शूद्र है। अतः यह मिलान अति उत्तम है। डनोंद सभी को मान एवं प्रतिष्ठा देती है तथा सेवा करती रहेंगी। साथ ही वह सबकी अपेक्षाओं को पूरा करती रहेंगी तथा किसी के भी साथ तर्क-वितर्क नहीं करेंगी। डनोंद एक नर्स की भाँति अपने पति एवं बच्चों की सेवा एवं तिमारदारी करती रहेंगी।

## वश्य

क्मअंदीन का वश्य जलचर है एवं डनोंद का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है। जिसके कारण यह मिलान मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जलचर कभी भी मनुष्य के ऊपर नियंत्रण स्थापित नहीं कर सकता। इसके विपरीत, मनुष्य या तो जलचरों पर नियंत्रण कर लेता है अथवा उसे समाप्त कर देता है अथवा उसका भक्षण कर लेता है अथवा उससे दूर भागता है। अतः यदि इन दोनों बीच विवाह सम्पन्न होता है तो यह अनुकूल नहीं रहेगा। इस स्थिति में डनोंद अति हावी होती रहेगी तथा हमेशा अपने पति को गुलाम समझती रहेगी तथा चाहेगी कि क्मअंदीन उसकी आज्ञा का पालन करे। इससे घर की शांति भंग होगी तथा प्रगति एवं समृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

## तारा

क्मअंदीन की तारा प्रत्यरि तथा डनोंद की तारा साधक है। क्मअंदीन की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। विवाह के उपरांत क्मअंदीन कालांतर में बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं नैतिक पतन का शिकार हो सकता है। उसके अवैध संबंध भी हो सकते हैं। परिणामस्वरूप डनोंद को काफी कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। भविष्य में तनाव, निराशा, अवसाद एवं पीड़ा के कारण उसका झुकाव अध्यात्म की ओर हो सकता है।

## योनि

क्मअंदीन की योनि मार्जार है तथा डनोंद की योनि सिंह है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या

कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

## मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में क्मअंदीन का राशि स्वामी डनेांद के राशि स्वामी से सम का संबंध रखता है। जबकि डनेांद का राशि स्वामी क्मअंदीन के राशि स्वामी के साथ शत्रु का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से खराब मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी का राशि स्वामी दूसरे के लिए सम किंतु दूसरा उसे शत्रु मानता हो तो ऐसा कुंडली मिलान अच्छा नहीं माना जाता है। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़ा, तनाव, मतभेद, एवं बहसबाजी का भाव बना रह सकता है। ऐसा भी हो सकता है कि यह बहस कभी-कभी हिंसक रूप धारण कर ले। जिससे शारीरिक चोट एवं मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक हानि हो सकती है।

## गण

क्मअंदीन का गण राक्षस है तथा डनेांद का गण भी राक्षस है। अर्थात डनेांद का गण क्मअंदीन के गण के समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण क्मअंदीन एवं डनेांद दोनों के स्वभाव, विचार तथा पसंद-नापसंद एक जैसे होंगे। यद्यपि कि दोनों के स्वभाव क्रूर, निष्ठुर एवं असंवेदनशील होंगे किंतु फिर भी एक-दूसरे के लिए ये अति अनुकूल एवं आदर्श साबित होंगे।

## भकूट

क्मअंदीन से डनेांद की राशि अष्टम भाव में स्थित है तथा डनेांद से क्मअंदीन की राशि षष्ठम भाव में स्थित है। जिसके कारण यह मिलान बिल्कुल अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें षडाष्टक दोष लग रहा है। इस मिलान को भकूट मिलान में स्वीकृति नहीं प्रदान की जाती है तथा 0 अंक/गुण प्रदान किए जाते हैं। क्मअंदीन एवं डनेांद दोनों आक्रामक, गुस्सैल एवं झगड़ालू स्वभव के होंगे। क्मअंदीन शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते हैं, उनके अनेक शत्रु हो सकते हैं तथा अपने व्यवसाय में भी उन्हें जूझना पड़ सकता है। दूसरी ओर डनेांद बिल्कुल लापरवाह, कोई भी कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारी नहीं निभाने वाली, हरदम स्वयं के स्वार्थपूर्ति

में ही खोई रहने वाली होंगी। उन्हें किसी भी प्रकार का वैवाहिक सुख प्राप्त नहीं हो पायेगा तथा उनके पति की मृत्यु की भी संभावना बनी रहेगी।

## नाड़ी

क्मअंदीन की नाड़ी अन्त्य है तथा डनेांद की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। अन्त्य एवं मध्य नाड़ी दो महत्वपूर्ण जीवनी शक्तियों पित्त एवं कफ की कारक हैं। जिसके कारण दम्पत्ति का परस्पर प्रेम, अनुकूलता, अच्छा भविष्य, सहयोग की भावना बनी रहेगी। आपकी संतान शक्तिशाली, बुद्धिमान, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

# मेलापक फलित

## स्वभाव

क्मअंदेीन की जन्म राशि जलतत्व युक्त कर्क तथा डनेांद की राशि वायुतत्व युक्त कुम्भ राशि है जल एवं वायुतत्व में स्वाभाविक समता एवं मित्रता का भाव रहता है। अतः क्मअंदेीन और डनेांद के मध्य नैसर्गिक समानताएं विद्यमान होंगी तथा वैवाहिक जीवन में मधुरता रहेगी। अतः मिलान अनुकूल रहेगा।

क्मअंदेीन की राशि का स्वामी चन्द्र तथा डनेांद की राशि का स्वामी शनि परस्पर शत्रु एवं समभाव में स्थित है। इसके प्रभाव से इनके मध्य विरोध एवं असमानता का भाव दृष्टिगोचर होगा। वे एक दूसरे के गुणों की अपेक्षा कमियों पर विशेष ध्यान देंगे जिससे परस्पर वैमनस्य के भाव में वृद्धि होगी तथा वैवाहिक जीवन में अशांति अधिक रहेगी। यदि क्मअंदेीन और डनेांद उपरोक्त तथ्यों की उपेक्षा करें तो वे किंचित शुभ फल प्राप्त कर सकते हैं।

क्मअंदेीन और डनेांद की राशियां परस्पर अष्टम एवं षष्ठ भाव में पड़ती है जो एक प्रबल भकूट दोष है। अतः इसके प्रभाव से इनके मध्य अनावश्यक वाद विवाद होते रहेंगे जिससे परस्पर संबधों में तनाव उत्पन्न होगा। साथ ही क्मअंदेीन और डनेांद के मध्य काफी मतभेद भी रहेंगे जिस पर कठिनाई से ही सहमति होने की संभावना रहेगी। इस प्रकार क्मअंदेीन और डनेांद को सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने के लिए सहिष्णुता एवं धैर्य का परिचय देना पड़ेगा तभी किंचित शांति की प्राप्ति हो सकती है।

क्मअंदेीन का वश्य जलचर एवं डनेांद का वश्य मानव है। जलचर एवं मानव के मध्य नैसर्गिक विषमता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में असमानता रहेगी। शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी विषमता होगी तथा एक दूसरे को कामेच्छाओं में प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में असमर्थ रहेंगे।

क्मअंदेीन का वर्ण ब्राह्मण तथा डनेांद का वर्ण शूद्र है। अतः क्मअंदेीन की रूचि शैक्षणिक तथा धार्मिक कार्यो के प्रति रहेगी परन्तु डनेांद किसी भी प्रकार के कार्य को ईमानदारी तथा परिश्रम से सम्पन्न करेंगी जिससे उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे।

## धन

क्मअंदेीन और डनेांद दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा

आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

## स्वास्थ्य

क्मअंदीन की नाड़ी अन्त्य तथा डनोंद की नाड़ी मध्य है। अतः इन पर नाड़ी दोष का कोई प्रभाव नहीं होगा तथा स्वास्थ्य इस ओर से सामान्य रहेगा परन्तु मंगल के प्रभाव से क्मअंदीन का स्वास्थ्य प्रभावित होगा एवं समय समय पर वे हृदय रोग संबंधी परेशानी प्राप्त करेंगे। साथ ही पित या रक्त संबंधी कष्ट की भी अनुभूति होगी। धातु संबंधी रोगों का भी क्मअंदीन पर प्रभाव रहेगा एवं संभोग क्रिया में भी उन्हें शिथिलता का आभास होगा जिससे दाम्पत्य जीवन में कलह तथा अशांति उत्पन्न हो सकती है। अतः उपरोक्त दोषों में न्यूनता लाने के लिए क्मअंदीन को नियमित रूप से हनुमानजी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए। इसके अतिरिक्त मूंगा धारण करना भी क्मअंदीन के लिए श्रेयस्कर रहेगा।

## संतान

संतति प्राप्ति के दृष्टि से क्मअंदीन और डनोंद का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उनको संतति की प्राप्ति उचित समय पर होगी तथा इसमें किसी भी प्रकार का अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा। साथ ही बच्चों के मध्य जन्म का अंतर भी अनुकूल रहेगा जिससे उनके उचित पालन पोषण करने के लिए पर्याप्त अवसर मिलेगा। इसके अतिरिक्त इनकी कन्या तथा पुत्र संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव काल के प्रति डनोंद के मन में अनावश्यक भय की भावना पहले से ही विद्यमान रहेगी जिससे वे मानसिक रूप से अशांति की अनुभूति करेंगी। अतः डनोंद को चाहिए कि ऐसी भय की भावना को मन से दूर करें क्योंकि उनका प्रसव बिना किसी विध्न या समस्या के सम्पन्न होगा तथा किसी भी प्रकार से प्रसूति संबधी चिकित्सा की उनको अनावश्यकता नहीं होगी साथ ही उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा सुदंर, स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में समर्थ रहेंगी। फलतः इससे सास ससुर तथा पति उनसे प्रसन्न रहेंगे।

क्मअंदीन और डनोंद बच्चों की उन्नति व्यवहार कुशलता एवं बुद्धिमता से प्रसन्न रहेंगे। साथ ही माता पिता की इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य नहीं करेंगे तथा उनके सम्मान का हमेशा ध्यान रखेंगे। लेकिन माता की अपेक्षा पिता से उनका विशेष लगाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा का पूर्ण पालन करेंगे। अतः क्मअंदीन और डनोंद का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा आनंद पूर्वक व्यतीत होगा।

## ससुराल-सुश्री

डनोंद के अपनी ससुराल के लोगों से संबधों में वांछित मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा सास से कुछ मतभेद रहेगा जिससे उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तथापि यदि डनोंद धैर्य एवं बुद्धिमता से कार्य लें तो सास की सहानुभूति प्राप्त हो सकती है।

ससुर देवर एवं ननदों से डनेांद के संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। ससुर की सुख सविधा एवं आराम का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा वे भी उसकी सेवा भावना से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवर एवं ननद से भी डनेांद का व्यवहार मित्रता पूर्ण रहेगा तथा वे भी डनेांद से प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार वह ससुराल के लोगों से सामंजस्य स्थापित करके आनंदानुभूति प्राप्त करेंगी।

## ससुराल-श्री

क्मअंदीन के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को क्मअंदीन अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी क्मअंदीन के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण क्मअंदीन के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।